सीता शील : एक परिचय

डॉ शैलेंद्र मोहन मिश्र

" जखन नर - नारि मे
सुंदरता एवं उत्कर्ष ।
तखन विश्व मे उच्च बनल छल
सब तरहें ई भारतवर्ष । "

भारतीय संस्कृति मे जगत जननी जानकीक स्वरूप एक आदर्श नारीक रूपमे चित्रित होइत अछि ।मिथिलाक पवित्र भूमि मे जाहि वैदेहीक जन्म भेल , ओ जाहि मर्यादा आ आदर्शकेँ स्थापित कएलनि , सहजहिं अनुकरणीय एवं अनुसरणीय अछि ।जे अपन त्याग आओर शीलक कारणें भारतीय नारीक प्रतीक ओ आदर्श बनल छथि ।
भारतीय वाङ्गमय मे वैदिक साहित्य सँ अद्य पर्यन्त रामकाव्यक प्राधान्य रहल अछि । यद्यपि मैथिली साहित्य मे कृष्ण काव्यक सुकुमार भावना केँ बोधगम्य करएबाक हेतु निर्बाध रूपेँ रहल अछि , मुदा चारित्रिक आदर्श केँ प्रतिष्ठापित करबाक हेतु , समाज केँ कर्त्तव्यमार्ग पर आरूढ़ करबाक हेतु , रामकाव्यक अवतारणा स्वभाविके अछि । परिणामतः कवीश्वर चंदा झाक ' मिथिला भाषा रामायण ' अत्यधिक लोकप्रिय भेल । मुदा एकरा बाद लगले कविवर लालदास ' रमेश्वर चरित मिथिला रामायण ' क प्रणयन कए ई प्रमाणित कए देल जे रामक लोकोत्तर महिमाक कारण अछि हुनक रमेश्वरत्व अर्थात लक्ष्मी (सीता) क स्वामित्व । एतए ई कहब अप्रासंगिक नहि होएत जे कविवरक शक्तिस्वरूपा जगज्जननी जानकीक बिना राम सुन्न भए जाइत छथि । आ इएह कारण अछि जे कविवर सीताराम झाक ' अम्बचारित ' , वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु ' क ' सितायन,' काशीकांत मिश्र ' मधुप ' क ' राधा विरह ' आदि कतिपय ग्रंथ मे शक्तिक महत्ता केँ मुक्त कंठ सँ स्वीकार कएल गेल अछि ।
भारतीय संस्कृतिक एहि पृष्ठभूमि मे श्री खड्गबल्लभ दास ' स्वजन ' द्वारा विरचित 'सीता शील ' क महत्व आओरो अधिक अछि । लेखकक घर थिकनि मधुबनी जिलाक झंझारपुर अनुमंडलक इमादपट्टी गाम । ' सीता शील (मैथिली पद्य) ' काव्यग्रंथक प्रथम संस्करणक प्रकाशन 1986 ई० मे श्री विद्यार्जुन प्रकाशन सिन्धुआटोली , गुलजारबाग पटना सँ भेल अछि ।
एहि काव्यग्रंथक विषय मे लेखक स्वयं लिखैत छथि -
" नारी चरित्रक संदर्भ मे विविध ग्रंथ प्रकाशित भेल अछि । ओहि ग्रंथमाला केँ अध्ययन कयला पर सब सँ उत्कृष्ट चरित्र श्री जानकीक पाओल जाइछ । किंतु ओहि सदग्रंथ सभक गूढ़ भाव एवं कठिन शब्दक कारणें सामान्यजन केँ आशाजनक लाभ नहि भेटैत छनि । तैं हम मिथिलाक बोल- चाल भाषा मे मैथिलीक पद्य रचना कैल अछि । एहि मे कथावस्तु त पूर्व प्रकाशित प्रसिद्ध सदग्रंथ वाल्मीकि रामायण, आध्यात्मरामायण तथा तुलसी कृत रामचरित मानस सँ लेल गेल अछि । कतहु कतहु अपना हृदय मे माता मैथिलक प्रति जे श्रद्धापूर्ण भाव उत्पन्न होइत गेल आ उपदेशप्रद बुझि पड़ल से एवं अन्यान्य सदग्रंथ मे सँ सूक्तिक एहि मे समावेश क देल अछि । " 1
भारतीय ललनाक उच्चादर्शक प्रतीक सीताक चरित गाथा ककरो लेल आकर्षणक वस्तु भए सकैत अछि । तैं स्वजन जी लिखैत छथि -
" अछि भेल अभिलाषा परम् नारीगणक हित किछु लिखी ।
पावन चरित्रक पद्य- पुष्पक हार गाँथब किछु सिखी ।।
आदर्श पुरुषक प्रेमिका केँ चरित शुभ लिखैत छी ।
उपदेश नारी लेल सीताशील मध्य पवैत छी ।।
यथार्थतः मर्यादा पुरुषोत्तमक सती- साध्वी , पति-परायणा , शीलक प्रतिमूर्ति प्रातः स्मरणीया सीताक चरित्र शक्तिक महत्ता केँ द्योतित करैत छथि ।

प्रस्तुत काव्यग्रंथ पूर्णतः सीताक चरित्र पर आधारित अछि। एहि ग्रंथक प्रारंभ श्री जानकीक जन्म सँ होइत अछि तथा सीता सँ संबंधित घटनाक्रमक वर्णन भेल अछि । एहि मे सीता जन्म सँ लए पाताल प्रवेशक प्रसंगक सरल , सहज , सुंदर वर्णन प्रस्तुत कएल गेल अछि ।

प्रथम प्रसंग मे श्री जानकीक जन्मक वर्णन कएल गेल अछि। महाराज जनकक वंश परिचय दैत जानकीक जन्मक कथा वर्णित अछि । संगहि माय द्वारा बेटी कें लूरि- व्यवहारक विषय मे सेहो कहल गेल अछि ।जानकीक जन्मक प्रसंग कवि लिखैत छथि -

" जन - मन परम प्रसन्न छल पृथ्वी प्रफुल्लित भ गेली ।
भ गेल कष्ट समाप्त भेली प्रकट जखने मैथिली ।। " 2

सीता क्रमशः नमहर होमए लगली , सभक स्नेह पात्र बनल छलीह , अपन व्यवहार सँ सभ कें प्रसन्न रखैत छलीह -

" दुसबाक अवसर देथि नहि किनको अपन व्यवहार सँ ।
पाबथि प्रशंसा सर्वदा सुसमाज आ परिवार सँ ।। " 3

माता सुनयना द्वारा पुत्री कें लूरि- व्यवहार सतत सिखाओल जाइत अछि । एखनहुँ मिथिला मध्य माय द्वारा बेटी के पारिवारिक , व्यावहारिक लूरि व्यवहार सतत सिखेबाक परिपाटी अछि ।

" सिखबथि गृहस्थाश्रमक सभटा लूरि एवं रिति कें ।
परिवार- प्रेमक पाठ पढबथि स्वजन- परिजन प्रीति कें।।"4

दोसर प्रसंग मे विश्वामित्र द्वारा श्री राम एवं लक्ष्मण कें मिथिलाक दर्शन एवं ओकर सांस्कृतिक महत्ता कें देखाओल गेल अछि।

" पहुँचैत मिथिला भूमि पर अतिशय प्रसन्न छलाह ओ।
मिथिलाक वैभव देखि अनुपम मुग्ध भ बजलाह ओ।।
हिम धवल पर्वत पुंज तल मे बसल मिथिला प्रांत ई ।
संम्पूर्ण विश्वक देश एवं प्रांत सँ शुभ शांत ई ।। 5

श्री राम लक्ष्मण मिथिला नगरीक भ्रमण करैत काल ओहि ठामक शोभा देखि मंत्रमुग्ध भए गेलाह -

" मुनि केर आज्ञा पाबि दुनू भाई गेला नगर मे ।
लगला बहय मिथिलाक अति शोभा समुद्रक लहरमे।।6

मिथिला मध्य एखनहुँ कुमारि कन्या कें विवाह सँ पूर्व गौरी पूजाक प्रचलन अछि। तैं सीता के माता द्वारा गौरी पूजन करबाक आज्ञा देल जाइत छनि -

" माता सुनयना देलि आज्ञा स्नेह सँ श्री सीय कें ।
पूजा करै लै जाउ सिय! हिमवान नृपतिक धीय कें ।।7

तेसर प्रसंग मे पुष्पवाटिकाक वर्णन अछि, एही सुंदर फुलवारी मे सीता रामक प्रथम मिलन होइत छनि। एक दिस जतए श्री राम अनुज लक्ष्मणक संग गुरुक आज्ञा सँ पूजाक निमित्त फूल लएबाक हेतु गेल छथि ओतहि दोसर दिस सीता सेहो गौरी पूजाक निमित्त फूल अनबाक हेतु अपन सखी लोकनिक संग गेल छथि । एही क्रममे जखन जानकी रघुनंदन श्री रामक दर्शन करैत छथि त ओ भाव विभोर भए एकटक सँ हुनका निहारए लगैत छथि -

" लखि रूप रामक जानकी कें लागि गेलनि टकटकी ।
कहु त तखुनका दृश्य कें वर्णन करै मे हम सकी ।। 8

चारिम प्रसंग मे सीता विवाहक प्रति महाराज जनक द्वारा कएल गेल धनुष यज्ञक विवेचन अछि । सीताक विवाह हुनकहि संग होएत जे भगवान शिवक एहि धनुषक भंजन करत।

" राखल एतए अछि शिव धनुष कें तोड़ि देता वीर जे ।
बनताह पति सीताक नर-वर भूमिपति रणधीर से ।।
श्री जानकी जयमाल पहिरौती परम आनन्द सँ ।
सम्पन्न होएत कार्य वैवाहिक सविधि सुपसंद सँ ।। 9

अनेको योद्धा लोकनि जखन धनुष भंग नहि कए सकलाह , तखन महाराज जनक दुखी भए जाइत छथि , ओ व्याकुल भए अपन पुत्रीक विवाहक प्रसंग चिंतित भए जाइत छथि। मुदा श्री राम गुरुक आज्ञा पाबि धनुष तोड़ि दैत छथि , सभ प्रसन्न छथि ।

" पौलनि गुरुक आदेश उठला राम इष्ट प्रणाम क ।
  धनुषक निकट झट चल गेला भोला दिगम्बर नाम ल।।
  श्री रामचन्द्र मृणाल तोड़ि देल पिनाक ओ ।
  नरपति उपस्थित जे छला कटलनि सभक श्रुति नाटओ।।10

पाँचम प्रसंग मे परशुराम - लक्ष्मणक संबाद कें देखाओल गेल अछि। जाहि मध्य दुनू गोटाक नोंक- झोंकक सहज प्रवाह द्रष्टव्य अछि -

" के शिव - धनुष कें खण्ड कयलक शीघ्र हमरा दे बता ।
  मारब पकड़ि कए अखन ओकरा कहि कने दे तौं पता।।11

रोसाएल परशुराम कें बड़ तीख आ कटुगर व्यंग्यक व्याजें लखन कहैत छथि -

" छी धन्य अपने- अपन गुण वर्णन करी निज बैन सँ ।
 मारैत क्षत्री वर्ग के घूमैत छी बेचैन सँ ।
अपना प्रतापक डींग हाँकब उचित बूझि पड़ैछ की ?
 क्रोधाग्नि सँ जड़बैत सबके नीक काज लगैछ की ? " 12

परशुराम जखन बुझि जाइत छथि जे श्री राम साधारण पुरूष नहि अपितु अवतारी पुरूष छथि । तथापि ओ हुनक परीक्षा लए अपना मोन कें बुझाबए चाहैत छथि , तैं कहैत छथि -

" कहलनि लिअ हे राम ! ई विष्णुक धनुष कें हाथ मे ।
 ई जौं चढ़ा दी तौं हटत संदेह बातक बात मे । " 13

छठम प्रसंगमे श्री राम आओर सीताक विवाहक दृश्य वर्णित अछि। विवाह संपन्न भेल , देखल जाए -

" शोभा विवाहोत्सवक लखि सन्तुष्ट भ वापस गेला ।
  ओ दृश्य कें अवलोकि मोहित देव - नर सभ क्यो भेला।।14

सातम प्रसंग मे श्री वैदेहीक विदाईक दृश्य वर्णित अछि । बेटीक विदाई केहन मार्मिक होइछ से देखल जाए -

" बेटी !जनकपुर त्यागि कय जौं जैव सासुर धाम कें ।
 तौं आब रहि जायत जनकपुर मात्र केवल नाम कें ।। "15

अयोध्या अएलापर सीता अपन शील सँ सभ कें प्रसन्न रखबाक सदिखन चेष्टा करैत छलीह -

" पितु तुल्य गुरुजन ससुर कें आदेश शुभ मानथि सदा ।
  माता जँका मानथि सुपूज्या सासुगण कें सर्वदा ।। 16

आठम प्रसंग मे रामक राज्याभिषेकक वर्णन सुनि मंथरा ओ केकैयीसंग भेल मंत्रणाक वर्णन अछि । जखन की केकैयी भरतहु सँ वेशी राम आओर सीता कें मानैत छथि। मुदा मंथराक कुमंत्रणाक चक्रव्यूह मे फँसि ओ महाराज दशरथ सँ राम कें वनवास आओर भरतक हेतु राजगद्दीक माँग क बैसैत छथि -

" वन मे रहथि श्री राम चौदह वर्ष तपसी भेष मे ।
 राजा बनथि श्री भरत गणना होनि अवधनरेश मे ।।17

नवम प्रसंग मे केकैयी द्वारा श्री राम के वन गमनक आदेश देल जाइत छनि । माता केकैयी जे भरतहु सँ वेशी श्री राम कें स्नेह करैत छलीह । मुदा की एहन दुर्योग भेल जे ओ एतेक निष्ठुर भए महाराज सँ श्री रामक हेतु वनवास एवं पुत्र भरतक हेतु राजगद्दीक याचना करैत छथि । आ ओ एहि मे सफल भए जाइत छथि । श्री राम के आदेश दैत केकैयी कहैत छथि -

" अवधेश सँ वरदान लै केकैयी कहल श्री राम कें ।
  चौदह वरस लै जाउ वन तजि क अयोध्या धाम कें ।।18

दसम प्रसंग मे श्री राम सँ वन ल जएबाक हेतु सीता आग्रह करैत छथि । ई सुनि राम चिंतित भए जाइत छथि , कोना कोमल सुकुमारी सीता वनक यातना कें सहि सकतीह । हुनका बुझबैत श्री राम कहैत छथि -

" है सिय प्रिये ! हमरा संगे भोगब अहाँ वन - दुख कोना ?